ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 08, अंक : 29, जनवरी-मार्च 2021

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

शतवर्ष विशेषांक

Scanned with CamScanner

शोध

समीक्षण

सृजन

संवाद

146 रीता चौधरी — समय और समाज का सच

151 एकता मंडल — रेणु की की कहानियों में सामाजिक सरोकार

कहानी (दो) : सवार ऊपर मानुष सत्य

157 जितेंद्र श्रीवास्तव — रेणु और उनकी कहानी 'आत्मसाक्षी'

160 अरविंद कुमार — बीमारों की दुनिया में नए सवेरे की आशा

166 नलीन रंजन सिंह — दो पाटो के बीच : उच्चाटन

172 अजय वर्मा — तीसरी कसम : अविस्मरणीय प्रेम कथा

176 निशांत — नाच देखने जाना महत्वपूर्ण है, नाच देखना नहीं

182 विनय कुमार मिश्र — संवदिया की संवेदना

कथेतर : धरती का धनी

187 भारत यायावर — अस्तित्व बचाने की जद्दोजहद / रिपोर्ताज

202 पंकज मित्र — बोली-ठोली-हँसी-ठट्ठा...यही है रेणु जी महिला (मैला) आँचल के लेखक.../ व्यंग्य

206 अनिल त्रिपाठी — रेणु की कविताई / कविता

211 प्रज्ञा — जीवन की असंगति में संगति की खोज / नाटक

225 डॉ. सुनीता — अंचल की आहट में पठनागार / आत्मसंस्मरण

233 सुनीता साव — कागज पर सबकुछ निचोरकर रख दिया / पत्र

241 चैनसिंह मीणा — सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य / रिपोर्ट एवं टिप्पणियाँ

248 शिव कुमार यादव — मेरे हमदम मेरे दोस्त / स्केच एवं संस्मरण

250 शिप्रा श्रीवास्तव — मानवीय संवेदनाओं के विविध रंग / निबंध

256 आनंद श्रीवास्तव — समय के साक्षी / साक्षात्कार

Scanned with CamScanner

जीवन की असंगति में संगति की खोज

प्रज्ञा

प्रयोगधर्मिता किसी भी रचनाकार के लिए एक बड़ी उपलब्धि और उसकी रचना-यात्रा का आकलन करने वाला गुणात्मक मूल्य होता है। अपनी ही रचनायात्रा को मुड़कर देखना, समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलावों को रेखांकित करते हुए कहन की दृष्टि से गुणात्मक बदलाव करना वास्तव में रचनाकार के तौर पर उपलब्धि, इस मायने में भी है कि रचनाकार अपने चिर-परिचित अंदाज को तोड़कर नए कथ्य के अनुसार नए शिल्प की खोज में निकलता है। कई बार नएपन की इस यात्रा में रचनाकार अपनी आजमाई विधा के अतिरिक्त नई विधा का भी संधान करता है। यह एक रचनाकार के विकास का मानक भी बनता है। लेकिन प्रयोगधर्मिता अपने साथ जोखिम और चुनौतियाँ भी लाती है। बाजदफा कई रचनाकार इस नएपन को साध न पाने के चलते अधिक दूर तक नहीं जा पाते परंतु नई संभावनाओं का रचनाकार इन जोखिमों और चुनौतियों से नहीं कतराता।

हिंदी में अनेक कथाकारों ने अपनी रचना-यात्रा में कथा के साथ नाटक में भी अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराई है। प्रेमचंद, प्रसाद, उपेंद्रनाथ अश्क, भुवनेश्वर, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, असगर वजाहत, रमेश उपाध्याय, स्वयं प्रकाश, सुरेंद्र वर्मा, हृषीकेश सुलभ, मीराकांत, त्रिपुरारि शर्मा जैसे अनेकानेक नाम हमारे सामने आते हैं। कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु जैसे अविस्मरणीय रचनाकार को लोग उनके कथाकार व्यक्तित्व से ही अधिक जानते हैं। उनके नाटककार व्यक्तित्व को अधिकांश लोग भले ही न जानें पर उनकी कहानियों के नाट्य-रूपांतरण और मंचन लगातार होते रहे हैं। 'पंचलैट', 'रसप्रिया', 'अच्छे आदमी', 'संवदिया' जैसी रेणु की कई कहानियों का मंचन और आकाशवाणी से उनका रूपांतरण प्रचारित-प्रसारित होता रहा है। रेणु का कथा-साहित्य अनेक नाट्य युक्तियों से सिंचित है। मुख्य रूप से संवाद, गीत, दृश्य रचने का कौशल और ध्वनिबिंबों का विराट संसार रेणु के कथा-लोक में मौजूद है।

कथा के क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करने वाले रेणु ने अपने जीवन काल में नाटक भी लिखे। उनकी रचनावली के पाँचवें खंड में अट्ठाइस पृष्ठों के भीतर तीन नाटक शामिल हैं। ये नाटक हैं-'उत्तर नेहरू चरितम्', 'ये हैं आपकी पड़ोसिनः कवयित्री' और 'पाँच नंबर प्लेटफॉर्म'। कथा से नाटक की ओर जानेवाले रेणु की यह तीन नाट्य रचनाएँ पूर्णकालिक नाटक नहीं हैं। अपने स्वरूप में यह तीनों नाटक आकार की दृष्टि में लघु हैं और इनका ढाँचा एकांकी-नाटक का ढाँचा अधिक लगता है। परंतु रेणु के नाटकों को हम सीधे तौर पर एकांकी भी नहीं कह सकते क्योंकि 'उत्तर नेहरू चरितम्' का नाट्य रूप संपादक ने 'एकतंत्री नाटक' तय किया है। 'पाँच नंबर प्लेटफॉर्म' आकार की दृष्टि में अपेक्षाकृत तीनों में बड़ा है दूसरे, यह रेणु की लिखी एब्सर्ड नाटिका है। 'ये हैं आपकी पड़ोसिनः कवयित्री' रेडियो नाटक के रूप में

Scanned with CamScanner